Udyam Academy
Powered by Roxbourg

पगडंडी शोध यात्रा

GRAM PUKAR
ग्राम पुकार

३ दिवसीय यात्रा ९ से ११ दिसम्बर २०२३

रहटगांव के वनांचल ग्राम, हरदा (म.प्र.)

संवाद

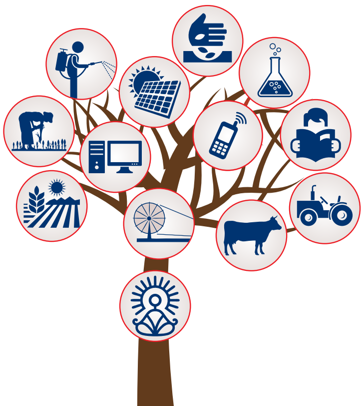

यात्रा अभी भी सीखने का सबसे गहन तरीका है।

"चरैवेति चरैवेति" : **चलते रहो, चलते रहो।**

CHILAURI
joy of togetherness

PROTSAHAN EDUCATION SOCIETY

Happy Harda

ग्राम पुकार फाउंडेशन

Cell: +91 8780690193 / 94244 01296.
info.grampukar@gmail.com www.grampukar.org

GRAM PUKAR
ग्राम पुकार

पगडंडी शोध यात्रा

३ दिवसीय यात्रा ९ से ११ दिसम्बर २०२३

रहटगांव के वनांचल ग्राम, हरदा (म.प्र.)

आभार

पगडंडी शोध यात्रा में अहमदाबाद स्थित संस्था 'सृष्टि' की टीम, हैप्पी हरदा, और प्रोत्साहन एजुकेशन सोसाइटी को सक्रिय सहयोग के लिए बहुत बहुत आभार।

ग्राम पुकार परिचय / ५

पगडंडी शोध यात्रा / ७

समझने की कोशिश.../ ८

कुकरावद / १०

नजरपुरा / 1६

मोहनपुरा / 1८

खात्माखेड़ा / २०

आम्बा / २२

बोथी / २६

महुखाल / ३४

राजाबरारी / ३८

द्वितीय पगडंडी शोध यात्रा में शामिल होने वाले यात्री हैं; रामकृष्ण सामेरिया, वर्षा सोलंकी, प्रदीप सिटोके, प्रवीण बांके, राजेश विश्नोई, अर्जुन भाई पाघडार, राजीव बाहेती, रिषभ, अशफाक, कृष्णा, जय, योगेश मालवीय, रवि सोलंकी, आकाश सिंह, मनोज जैन, सुनीता जैन, प्रेमनारायण सोरठिया, डी पी मिश्रा, ओम शुक्ला, सुनील बागरे, दिनेश राठी, पंकज शर्मा, मोनिका मालवीय, कमलेश गुर्जर, मंगलेश फुलरे, मनोज बागरे, सोना यादव, संध्या गौर, मेघा सतनकर और प्राची सिरसाम।

रिपोर्ट लेखक - रामकृष्ण सामेरिया, राजेश विश्नोई, वर्षा सोलंकी, जय बरकाड़े।

फोटोग्राफी - अशफाक।

डिजाईन - रामकृष्ण सामेरिया।

ग्राम पुकार फाउंडेशन

परिचय:

ग्राम पुकार फाउंडेशन एक ग्रामीण सामाजिक संगठन है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण भारत में समावेशी विकास और सतत सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देना है। यह फाउंडेशन ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यमिता के मायम से शिक्षा, स्वरोजगार, महिला सशक्तिकरण और कृषि नवाचार को सहायता, समर्थन और प्रोत्साहित करने के लिए कार्यरत है।

मिशन:

ग्राम पुकार फाउंडेशन का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण समुदायों को उद्यमिता के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाना, उन्हें सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त करना तथा पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक तकनीक का समन्वय करते हुए स्थायी विकास को सुनिश्चित करना है।

मुख्य कार्यक्षेत्र:

1. ग्रामीण उद्यमिता

- छोटे एवं सूक्ष्म उद्यमों को विकसित करने में सहयोग
- महिला उद्यमिता को बढ़ावा देना
- स्थानीय कारीगरों और किसानों के उत्पादों को बाज़ार से जोड़ना

2. शिक्षा और कौशल विकास

- युवाओं और महिलाओं को व्यवसायिक प्रशिक्षण देना
- डिजिटल साक्षरता और आधुनिक तकनीक से जोड़ना
- शिक्षा के लिए सामुदायिक संसाधनों का विकास

3. महिला सशक्तिकरण

- स्वयं सहायता समूहों (SHG) को सशक्त बनाना
- महिलाओं को स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराना
- स्वास्थ्य और शिक्षा में जागरूकता कार्यक्रम चलाना

4. कृषि और पर्यावरण संरक्षण

- जैविक खेती और प्राकृतिक कृषि को बढ़ावा देना
- जल संरक्षण और स्वच्छता अभियानों में ग्रामीणों की भागीदारी
- पारंपरिक कृषि तकनीकों को आधुनिक नवाचारों के साथ जोड़ना

5. सामुदायिक विकास

- ग्रामीण नेतृत्व को विकसित करना
- सरकारी योजनाओं की जानकारी और लाभ पहुंचाना
- ग्राम स्तर पर सहयोगी संस्थानों और संगठनों के साथ मिलकर काम करना

भविष्य की योजनाएँ:

- अधिक से अधिक ग्रामीण युवाओं को स्टार्टअप और उद्यमिता से जोड़ना
- डिजिटल प्लेटफॉर्म और ई-कॉमर्स के माध्यम से ग्रामीण उत्पादों को वैश्विक बाजार तक पहुंचाना
- कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण के क्षेत्र में नवाचारों को बढ़ावा देना

ग्राम पुकार फाउंडेशन एक नई आशा और प्रेरणा का प्रतीक है, जो ग्रामीण भारत को आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से सशक्त बनाने के लिए सतत प्रयासरत है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें –

रामकृष्ण सामेरिया, संस्थापक और सचिव

+87806 90193 / 94244 01296

info.grampukar@gmail.com

www.grampukar.org

www.iamramkrishna.in

पगडंडी शोध यात्रा

३ दिवसीय यात्रा ९ से ११ दिसम्बर २०२३
रहटगांव के वनांचल ग्राम, हरदा (म.प्र.)

पगडंडी शोध यात्रा

३ दिवसीय यात्रा ९ से ११ दिसम्बर २०२३

(रहटगांव के वनांचल ग्राम, हरदा, मध्यप्रदेश)

उद्देश्य

पगडंडी शोध पद यात्रा का उद्देश्य ग्रामीण जन-जीवन, ज्ञान, संसाधन, संस्कृति, और स्थानीय उद्यम, संभावनाओं को समझना, प्रोत्साहन देना है। यह अंतर्मन की यात्रा भी है, इसलिए कई यात्रियों के लिए यात्रा जीवन परिवर्तन वाली होती है।

यह सीखने-सीखाने की यात्रा है। पहले दिन यात्रा के दौरान हम बहुत बाते करते हैं। अपने अनुभव, ज्ञान साझा करते हैं। दूसरे दिन हम सुनते ज्यादा है। सुनाने के लिए शब्द कम पड़ने लगते हैं। तीसरे दिन मौन होते जाते हैं। बहुत ही व्यक्तिगत, अंतर्मन की यात्रा की शुरूआत होने लगती है। आप खुद को और दूसरों को और बेहतर तरीके से समझने लगते हैं।

समझने की कोशिश...

सपने और उन्हें पूरा करने की जिद हो तो तकलीफ और संसाधन की कमी भी रास्ता नहीं रोक सकती। शोध यात्रा के पड़ाव में आए सभी गाँवों में पानी दूर से लाना पड़ता है। कुछ घरों में पानी के बोर हैं या सरकारी बोर से पानी मिलता है जिसे सिर के ऊपर घड़ा रखकर लाना होता है, लेकिन संकट में ही प्रेरक कहानी का भी जन्म होता है।

रामवती धुर्वे ने ग्राम महुखाल में आम के ५० से ६० वृक्षों का बगीचा तैयार किया है। हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट के सहयोग और स्वयं के प्रयास से आम का बगीचा लगाने का उनका सपना पूरा हुआ। इसकी ख़ुशी में उन्होंने आम की पहली फसल सभी ग्रामवासियों को भेंट में दी। इस तरह के उदहारण समाज में सकारात्मक सन्देश देते हैं और गाँव एक परिवार है इस भावना को प्रेरित करते हैं। महूखाल में कुछ युवाओं ने आगे आकर स्वरोजगार के लिए मदद मांगी। हमारी टीम इस दिशा में प्रयास करेगी।

खात्माखेड़ा में यात्रियों ने स्थानीय जड़ी बूटियों और जंगली उत्पाद के बारे में जानकारी ली। मटियां, कुसुम जुंझरू सब्जी खाई जाती है। नीनू बाई ने बताया कि कोऊ की कोपल का उपयोग दस्त रोकने में किया जाता है। दैयड की पत्ती का उपयोग हड्डी जोड़ने में और इसकी छाल का काढ़ा दर्द कम करने में किया जाता है। बारहमासी का उपयोग घाव सुखाने में किया जाता है। यह सामुदायिक ज्ञान है। हम इसकी वैज्ञानिक पुष्टि नहीं कर रहे हैं। वनस्पतियों के उपयोग में शोध कर रहे शोधार्थियों को इस विषय में शोध कर पुष्टि करनी चाहिए।

शोध यात्रा में बहुत अच्छी बात देखने को मिली कि गाँवों में की गई सभा में पुरुषों की तुलना में महिलाओं और बच्चों की संख्या ज्यादा थी। इससे समझ आता है महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ने से सकारत्मक परिवर्तन तेजी से आ सकता है। शोध यात्रा की पूरी तैयारी और यात्रा का नेतृत्व भी उद्यमी फुलड़ी निवासी वर्षा सोंलंकी ने किया और उनका साथ दिया टीम के सदस्य प्रदीप, कमलेश और प्रवीण बांके ने।

हालाँकि शोध यात्रा के दौरान हम कोई इनोवेशन खोजने में असफल रहे। हमें उम्मीद है कुछ न कुछ नवाचार हो रहा होगा। हो सकता है बाद में पता चला। एक अच्छी बात देखने को मिली की लगभग सभी घरों में पीछे काफी जगह है और कुछ हिस्से में परम्परागत सब्जियां लगाई जा रही हैं। किचन गार्डन कांसेप्ट पर यहाँ थोड़ी ज्यादा मात्रा में हरी सब्जियों के साथ अदरक, हल्दी औषधि फसलों की खेती की जा सकती है।

आम्बा में बहन आशा ने पानग्या और बोथी में भगवती, सलिता, सुदिया आशाबाती जी ने खिचड़ी में स्नेह और आशीर्वाद भी मिला दिया था। चूल्हे पर पकी खिचड़ी इतनी ज्यादा स्वादिष्ट थी की खानेवालों ने दो से तीन बार ली।

राजबरारी स्टेट में किये जा रहे कार्य ग्रामीण उद्यमिता के श्रेष्ठ उदाहरणों में से एक है। सभी को खासकर युवाओं को यहाँ आकर इसे समझना चाहिए।

- रामकृष्ण सामेरिया

कुकरावद

दूरस्थ ग्रामीण अंचल की पैदल यात्रा हमें प्रकृति के साथ-साथ एक दूसरे के करीब लाती है। हमें जीवन के वास्तविक मूल्यों से परिचित कराती है। पगडंडी शोध यात्रा का उद्देश्य पारंपरिक ज्ञान, अनुभव, संस्कृति और स्थानीय चुनौतियों, संभावनाओं को समझना और सीखना है।

९ दिसम्बर से हरदा (मध्यप्रदेश) से प्रारम्भ हुई यात्रा का पहला पड़ाव कुकरावद था। यहाँ हम श्री रामाधार जी काजवे (आयु ९९ वर्ष), नारदीय भजन गायन परम्परा के गायक से मिले। उनका गायन सुना। उनकी ऊर्जा और जीवटता ने हमें प्रेरित किया। उनके गायन को विडियो में रिकॉर्ड कर अगली पीढ़ी के लिए सहेजने का काम किया जा सकता है।

नारदीय भजन गायन परम्परा एक प्राचीन भारतीय संगीत परम्परा है। यह मध्य प्रदेश के निमाड़ क्षेत्र में विकसित हुई। इस परम्परा में भजनों को एक विशेष लय और ताल में गाया जाता है। नारदीय भजन गायन परम्परा की विशेषता यह है कि इसमें भजनों को गाते समय भक्तों द्वारा भावपूर्ण ढंग से नृत्य किया जाता है। नारदीय भजन गायन परम्परा मध्य प्रदेश की एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक धरोहर है।

कुकरावाद में आठ एकड़ शासकीय जमीन पर नर्सरी बनी हुई है। प्रयास सामाजिक संस्था के साथी यहां पर गौशाला की देखरेख के साथ ही देशी प्रजाति के पौधों के संरक्षण का काम कर रहे हैं। आम, अमरूद, अनार, आंवला जैसे पौधे लगे हुए हैं।

गौशाला में ३० से ४० गायें हैं। बेहतर शेड हैं। लम्बा सा गुठान हैं। गौशाला के पीछे ही गौशाला की उपजाऊ जमीन हैं। गौशाला को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के लिए संभावनाओं पर काम किया जा सकता है।

स्वागतम्

कार्यालय
ग्राम पंचायत कुकरावद जनपद पंचायत हरदा
प्रयास सामाजिक संस्था,

कुकरावद के युवा कमलेश गुर्जर वर्मी कम्पोस्ट बनाते हैं और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देते हैं।

केशोद, गुजरात से आये पगडंडी शोध यात्रा में शामिल इनोवेटर राष्ट्रपति अवार्डी श्री अर्जुन भाई ने अपने स्वर्गारोहण मॉडल को दिखाया और इनोवेशन की चुनौतियों पर उन्होंने बातचीत की।

नोयडा से शामिल युवा साथी इनोवेटर आकाश ने पूजास्थलों के वेस्ट मटेरियल फूल एवं राख से अनेक प्रकार की मूर्तियां एवं राखी निर्माण की प्रक्रिया को बताया।

राजीव बाहेती जी ने नर्मदा वैली के कामों पर फोकस डाला। प्रोत्साहन संस्था के राजेश विश्नोई ने रूरल टूरिज्म पर किये जा रहे काम की जानकारी दी गई।

संभावनाएं

- गौशाला में गौ आधारित प्रोडक्ट्स बनाये जा सकते हैं। गोबर से लकड़ी बनाने की मशीन लगाई जा सकती है। लकडिय़ों की बचत और गोबर लकड़ी दाह संस्कार के लिए उपयुक्त हैं। मशीन कीमत रूपये 45000/- लगभग हो सकती है।

- गोमूत्र से वर्मी कम्पोज खाद का निर्माण, किसानों को वितरण /विक्रय किया जा सकता है। प्लास्टिक बेड की बजाय जमीन पर भी कर सकते हैं। ब्रांड बनाकर, सहकारी सोसायटी बनाकर सरकारी निविदा में शामिल हो सकते हैं।

- गायों की नस्ल सुधार के लिए सीमेन (साहीवाल, गिर) का उपयोग करके बेहतर नस्ल की गाये तैयार करना होगा। दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी होगी। गौशाला सक्षमता के लिए बेहद जरूरी है। आसपास के युवाओं, किसानों के लिए लर्निंग सेन्टर बनाया जा सकता है। तत्पश्चात गतिविधियों की छोटी छोटी बुकलेट बनाना चाहिए।

- नर्सरी में कुछ पौधों पर ग्राफ्टिंग बडिंग की जा सकती है। गांव के युवाओं को ही प्रशिक्षण लेकर ही काम प्रारम्भ करना चाहिए। देशी पौधे की पौधशाला तैयार करना, नर्सरी के अंदर बांस का ट्रेनिंग /मीटिंग सेन्टर बनाना, देशी आंवला, आम आदि फलों के बायप्रोडक्ट तैयार करना। किसानों के लिए लर्निंग/ट्रेनिंग सेन्टर बनाया जा सकता है।

नजरपुरा

यात्रा का दूसरा पड़ाव नजरपुरा गांव था यहां स्कूली बच्चों के साथ विज्ञान के नवाचार पर संवाद किया गया। यहां के बच्चे बहुत सक्रिय हैं। स्कूल की सीनियर शिक्षिका तंवर मेडम एवं वर्तमान शाला प्रधान ने यहां बेहतर काम किया है। नजरपुरा का स्कूल कैम्पस बेहद सुन्दर है, बच्चों ने कविताएं गीत सुनाये। नवाचार के पोस्टरों को बच्चों ने देखा, बच्चों को गिफ्ट और टॉफी, स्कूल स्टॉफ को शॉल से सम्मानित किया गया।

संभावनाएं

बच्चों के विज्ञान क्लब बनाये। नवाचार गतिविधियों के लिए छोटी वर्कशॉप का आयोजन जैसे क्राफ्ट, औरिगेमी, विज्ञान माडल, विज्ञान पुस्तकालय बनाना।

मोहनपुरा

यहां पर ओझा समुदाय की महिलाओं के साथ बातचीत की। यह समुदाय शरीर पर परम्परागत गुदना गुदवाने का कौशल ज्ञान रखता है, हांलाकि इस कला में पारंगत महिलाएं की संख्या बहुत कम है।

संभावनाएं

महिला समूह को मार्गदर्शन की आवश्यकता हैं। मांडने /गुदना के कौशल /ज्ञान को सहेजने के लिए समुदाय के साथ काम करने की जरुरत है।

परंपरागत गोदना

ओझा समाज बीजा पेड़ की इस लकड़ी से प्राकृतिक रंग बनाते हैं।

खात्माखेड़ा

यहां पर हनुमान मंदिर प्रांगण में गांव के लोग इकट्ठे हुए। यहां पर हाथ से बनाये दोने पत्तल को मशीन से बनाने का काम महिलाओं का समूह करता है। यहां जड़ी-बूटी से महिलाओं के माहवारी का ईलाज जानने वाला महिला मीटिंग में थी। जड़ी-बुटी के समुदाय के ज्ञान को सहेजना जरूरी है। वनसमिति के सदस्य एवं गांव के बुजुर्ग लोगों को शाल से सम्मानित किया गया। वनविभाग के डिप्टी रेंजर, सहायक एवं स्कूल शिक्षिका आंगनबाड़ी कार्यकर्ता कार्यक्रम में शामिल थे।

संभावनाएं

- दोने पत्तल के काम का सुचारू रूप से संचालन जरुरी है। उनके प्रोडक्ट विक्रय होने लगे तो महिलाओं में भरोसा बनेगा।
- जड़ी-बूटी के परम्परागत ज्ञान को संग्रहित किया जा सकता है।

आम्बा

आम्बा गांव पहाड़ वनों के बीच स्थित है। वनचौकी एवं स्कूल के पास ही लकड़ी और कवेलु की छत का बना हुआ बेहद सुन्दर सामुदायिक स्थान पर कार्यक्रम का आयोजन रखा गया। गांव की महिलाओं ने यात्रा के सभी लोगों का गुलदस्ते एवं तिलक लगा कर स्वागत किया।

यहां पर मोटा अनाज पर बातचीत हुई। परंपरागत ज्ञान पर महिलाओं ने अपनी बातें रखी। आशा बहन ने यात्रा के झोलों के लिए पेंटिंग में सहयोग किया। यहां के शतायु लोगों का शॉल से सम्मान किया गया। वनविभाग के डिप्टी रेंजर, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता भी शामिल थे।

आंबा में स्कूल के आंगन में भोजन की व्यवस्था रखी गयी थी। मक्का और गेहूँ के आटे से पानग्या बना कर पला़स के पत्तों के बीच रखकर सेका गया था। देशी बैंगन का भर्ता, देशी चेरी टमाटर की चटनी और दाल भात यहीं था दोपहर का लाजवाब भोजन.. बेहद स्वादिष्ट.. वाह..!

Happy Harda
JANAK

संभावनाएं

- आम्बा में बांस के उत्पाद बनाने की संभावनाएं बन सकती है। यहां समुदाय बांस से मकानों के टट्टे बगैरह बनाते हैं। वनविभाग के साथ संवाद करके गांव में ही ये गतिविधि प्रारम्भ की जा सकती है। बांस की ज्वेलरी, छोटे सजावटी आईटम बगैरह बनाए जा सकते हैं।
- देशी बीजों को संग्रहित करके बीज बैंक (मोटा अनाज) बनाया जा सकता है।
- महिलाओं के साथ मिलकर घरों के पीछे देशी बीजों के किचन गार्डन को विकसित किया जाना चाहिए।
- देशी सब्ज़ियों को सुखा कर पैंकिग करके बेचा जा सकता है। बाजार में सूखी हुई देशी सब्जियां बहुत कम उपलब्ध हैं।
- ये गतिविधि - खातमाखेडा, आंबा, बोथी, मऊखाल में भी की जा सकती है।

बोथी

पहाड़ की तराई में बसा बो़थी बेहद सुन्दर गांव हैं.. गांव के दूसरे सिरे पर दक्षिण पूर्व में गंजाल नदी का लम्बा पाट छोटे - छोटे झरने का निरंतर नाद..रह - रह कर पशुओं के रंभाने की आवाज और रात्रि को सारा आकाश हमारा.. बस गिनते रहिये तारे.. निहारते रहिये हमारी आकाश गंगा को...

बोथी में शाम को स्कूल प्रांगण में समुदाय के साथ संवाद था गाँव के काफी लोग एवं महिलाएं बच्चे शामिल हुए थे।

यात्रा के पहलें दिन की यात्रा का आखरी पड़ाव था बोथी ग्राम। अर्जुन भाई और आकाश ने बच्चों के साथ विज्ञान इनोवेशन पर बातचीत की, डाईट हरदा से आये श्री मनोज जैन एवं उनके स्टूडेंट भी शामिल थे। गांव के महिला समूह ने रात्रि में खिचड़ी बना कर सभी को खिलाई, अगले दिन सुबह के नाश्ते में समूह ने नाश्ता कराया।

संभावनाएं

- बोथी में महिला समूह के साथ देशी बीजों सब्जी और फसलों का किचन गार्डन बनाना, बीज बैंक बनाया जा सकता है।
- बांस के छोटे उत्पाद बनाने के लिए ट्रेनिंग हो सकती है। यहां हर घर में लोग बांस के टट्टे बनाने का काम करते हैं। वनविभाग के साथ योजना बनाना चाहिए।

शाला-वीथी.

पगडंडी शोध यात्रा

पगडंडी शोध यात्रा
३ दिवसीय यात्रा ९ से ११ दिसम्बर २०२३
रहटगांव के वनांचल ग्राम, हरदा (म.प्र.)

पगडंडी शोध यात्रा
३ दिवसीय यात्रा ९ से ११ दिसम्बर २०२३
रहटगांव के वनांचल ग्राम, हरदा (म.प्र.)

महुखाल

सामुदायिक भवन में मीटिंग रखी गयी थी। महुखाल में एक रामवती धुर्वे ने लगभग ६० से ७० पौधों का आम का बगीचा तैयार किया है । पहली फसल के लगभग २ क्विंटल फल उन्होंने समुदाय में फ्री वितरण किये। आम का बगीचा लगाने की प्रेरणा उनको पंचायत एवं हार्टीकल्चर विभाग से मिली।

वनचौकी में दोपहर के भोजन में स्वादिष्ट दाल बाटी थी। तली हुई मिर्च के साथ जायका..! यहां से भोपाल के साथी यात्रा में शामिल हुए।

महुखाल से ३.३५ दोपहर में हमने राजाबरारी के लिए प्रस्थान किया। जंगल के बीच घुमावदार पगडंडियों पर चलना, रास्ते में पशु चराने वाले लोगों के साथ बातचीत करते हुए हम ६ बजे शाम राजाबरारी स्टेट पहुंच गये।

संभावनाएं

- यहां पर घर के पीछे बाड़े हैं जिनमें फल सब्जी बाड़ी लगाने की योजना बनाई जा सकती हैं।
- देशी बेर के पौधों पर ग्राफ्टिंग बडिंग किया जा सकता है, युवाओं को एक्सपोजर एवं प्रशिक्षण दिया जा सकता है।
- आम के बायप्रोडक्ट की ट्रेनिंग दी जानी चाहिए। आम की स्लाईस, आम पापड़, आम की सूखी खोल जैसे उत्पाद बन सकते हैं।

राजाबरारी स्टेट

राजाबरारी स्कूल प्रांगण मे असेम्बली के बाद बच्चों को यात्रा की जानकारी दी गयी। बच्चों ने पोस्टर प्रदर्शनी का अवलोकन किया, यहां के प्राचार्य श्री कपूर सर को विशेष रूप से सम्मानित किया गया वे 1981 से अभी तक अनवरत अपनी सेवाएँ बच्चों के बीच दे रहे हैं। राजाबरारी के विभिन्न प्रकल्प संचालन में हैं यहां पर पहला प्राथमिक स्कूल (स्थापना वर्ष 1937) लडकियों का सिलाई सेन्टर, स्वेटर बुनने का सेन्टर, दूध प्रसंस्करण यूनिट, मसाला यूनिट, कपड़े सिलाई यूनिट आदि का अवलोकन किया।

प्रत्येक यूनिट के मुख्य संचालकों को शाल से सम्मानित किया गया, राधा स्वामी दयाल बाग के राजाबरारी प्रकल्प के मुख्य संचालक श्री सुमेर जी एवं उनकी पत्नी सुश्री रागिनी जी ने अपने अनुभव शेयर किये उनके मार्गदर्शन में वर्तमान में पूरा प्रकल्प काम करता है। अंत में इनका सम्मान किया गया।

संभावनाएं

- राजबरारी स्टेट द्वारा किये जा रहे सामुदायिक कार्यों से सीखकर अन्य गाँवों में अनुकरण किया जा सकता है ।

३ दिवसीय यात्रा ९ से ११ दिसम्बर २०२३
रहटगांव के वनांचल ग्राम, हरदा (म.प्र.)

व्यावसायिक

D.E.I. CENTER OF RURAL ENTREPRENEURSHIP

ग्राम पुकार फाउंडेशन

Cell: +91 8780690193 / 94244 01296.
info.grampukar@gmail.com www.grampukar.org